B.A-II

- Dr. [illegible]

Q:- सामाजिक समस्याओं के शोध के लिए प्रयोगात्मक विधि के गुण-दोषों का विवेचना करें।

Ans:- प्रयोगात्मक विधि सामाजिक समस्याओं के शोध के लिए एक महत्वपूर्ण विधि है इस विधि द्वारा अभिरुचि, जनमत, प्रचार संगठन आदि से संबंधित अध्ययन किया जाता है। इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि जो परिणाम आवे वह बार-बार उसी रूप में आये।

फेस्टिंगर के अनुसार (1953) - "प्रयोग का मूल आधार स्वतंत्र चर में परिवर्तन करने से स्वतंत्र चर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।"

जहोदा (1959) के अनुसार "प्रयोग परिकल्पना के परीक्षण की एक विधि है।"

आइजनेक के अनुसार - "प्रयोग वह विधि है जिसमें चरों को योजनानुसार घटा बढ़ा कर निरीक्षण कर लेते हैं।"

शीर्षगत संदर्भ में कहा जा सकता है कि प्रयोगात्मक विधि में चरों को घटा-बढ़ा कर नियंत्रित किया जा सकता है।

किसी भी मनोवैज्ञानिक घटना के पीछे कारण-परिणाम संबंध का हाथ होता है।

गुण:- (i) इस विधि का सबसे बड़ा गुण यह है कि इस विधि में प्रयोगकर्ता का मनोभाव (पक्षपात) का प्रभाव प्रयोग पर नहीं पड़ता है।

(ii) इस विधि में चरों को घटाया बढ़ाया जा सकता है जिसके कारण परिणाम संतोषजनक हो पाता है।

(iii) इस विधि में प्रयोग नियंत्रित वातावरण में होता है अत: इस पर वाह्य कारक का प्रभाव नहीं पड़ता है।

(iv) प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्राप्त परिणाम का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है अत: इसका परिणाम सार्वभौमिक होता है।

दोष: (i) इस विधि द्वारा सभी तरह के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करना संभव नहीं हो पाता है.

(ii) इस विधि में यादृच्छिक रूप से प्रयोज्य पर प्रयोग किया जाता है और प्राप्त परिणाम को सभी व्यक्तियों के लिए एक जैसा मान लिया जाता है।

(iii) इस विधि में प्रयोज्य द्वारा किया गया व्यवहार बनावटी हो सकता है। संभव है कि प्रयोगिक वातावरण में किया गया व्यवहार और वास्तविक जगत में किया गया व्यवहार में अंतर हो।

B.A. II

- डॉ. मु. K.

समाज मनोविज्ञान एवं इसका समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र के साथ संबंध -

समाज मनोविज्ञान की उत्पत्ति के संबंध में सर्वप्रथम 1908 में विलियम मैकडुगल द्वारा लिखित पुस्तक "इन्ट्रोडक्शन टु सोशल साइकोलॉजी" में उल्लेख मिलता है।

1908 ई० के बाद अनेक मनोवैज्ञानिकों ने समाज मनोविज्ञान का अध्ययन कर इस संदर्भ में परिभाषा दिये -

किम्बल यंग (1962) के अनुसार, "समाज मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अंतःक्रियाओं का तथा इन अंतःक्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं, संवेगों एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करता है।"

क्रेच क्रेचफिल्ड तथा बैलेकी (1962) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहारों के अध्ययन का विज्ञान है।"

फिशर (1982) के अनुसार, "समाज मनोविज्ञान में इस बात का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किस तरह से किसी व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक वातावरण में उपस्थित अन्य लोगों के व्यवहारों द्वारा प्रभावित होता है तथा उसे बदलने में प्रभावित करता है।"

मेयर्स (1988) के अनुसार, "व्यक्ति दूसरे के बारे में किस तरह सीखता है, दूसरों को कैसे प्रभावित करता है, तथा एक दूसरे को किस तरह संबंधित करता है, का वैज्ञानिक अध्ययन ही समाज मनोविज्ञान है।"

शीर्षगत परिभाषा से स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति द्वारा सामाजिक परिवेश में किये गये व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

समाज मनोविज्ञान का समाजशास्त्र से संबंध

समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान दोनो व्यवहारवादी विज्ञान के रूप में जाने जाते हैं। मानसिक प्रक्रिया भी इस अर्थ में सामाजिक है कि वह प्रत्येक क्षण व्यक्तियों की अंतःक्रियाओं और सामाजिक पर्यावरण द्वारा प्रभावित होता है। दूसरी ओर सामाजिक शक्तियाँ एवं अंतक्रियाएँ व्यक्तियों की मानसिक प्रक्रियाओं की उपज है। समाजशास्त्र का मौलिक संबंध समाज और सामाजिक प्रक्रियाओं में है, जबकि मनोविज्ञान का संबंध व्यक्ति और उसकी मानसिक प्रक्रियाओं में है।

समाज मनोविज्ञान का मानवशास्त्र से संबंध

मानवशास्त्र में मानव के शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
लिन्टन ने मानवशास्त्र को दो भागों में बाँटा है - ⓐ शारीरिक मानवशास्त्र ⓑ सांस्कृतिक मानवशास्त्र।
उपर्युक्त दोनों पक्षों का अध्ययन करने के मानवशास्त्र समाज मनोविज्ञान से आँकड़े प्राप्त कर विश्लेषण करते हैं।